ISSN No.: 0970-9398

राजभाषा भारती

वर्ष : 42 • अंक 159 • मार्च, 2021

विशेषांक : हिंदी-अंतरराष्ट्रीय फलक पर

"जन जन की
भाषा है हिंदी"

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
10.	श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में हिंदी का प्रचार–प्रसार	प्रजील नागाड़ वितान, श्रीलंका	50
11.	जापान में हिंदी की स्थिति, मूल्यांकन और संभावनाएं	प्रोफेसर सिद्धार्थ सिंह, टोक्यो	53
12.	हिंदी भाषा का बोल–बाला	सूर्यकांत सुतार (सूर्या), तंजानिया	57
13.	हिंदी का वैश्विक विस्तार	नमन उपाध्याय, फ्रांस	60
14.	हिंदी–ज्ञान (कविता)	डॉ. ओदोलेन स्मेकल, चेक गणराज्य	65
15.	'कंठस्थ' में काम करना बहुत आसान, करके तो देखिए	राजेश श्रीवास्तव, भारत	66
16.	रूस तथा पूर्व सोवियत गणराज्यों में हिंदी	डॉ. ऋचा मिश्र, भारत	73
17.	हिंदी का अंतरराष्ट्रीय संदर्भ: विविध आयाम	डॉ. हरीश कुमार सेठी, भारत	78
18.	हिंदी भाषा–साहित्य के महान रूसी अनुवादक और आलोचक ए. पी. बारान्निकोव	अखिलेश आर्येन्दु, भारत	87
19.	अंतरराष्ट्रीय पटल पर हिंदी	डॉ. जमुना कृष्णराज, भारत	90
20.	नेपाल का हिंदी साहित्य : विगत से वर्तमान	डॉ. श्वेता [illegible], नेपाल	[illegible]
21.	विश्व में हिंदी की लोकप्रियता सभी हदों को पार करती जा रही है	डॉ. घनेश द्विवेदी, भारत	

ISSN No.: 0970-9398

रूस तथा पूर्व सोवियत गणराज्यों में हिंदी

– डॉ. ऋचा मिश्र

संचार क्रांति और आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में पारस्परिक विचार–विनिमय और विभिन्न देशों के बीच सार्थक संवाद का महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है। यह संवाद भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक मूल्यों के आदान–प्रदान द्वारा सकारात्मकता पूर्वक स्थापित किया गया है। आज विश्व का यदि हर छठा नागरिक भारतीय है, तो यह हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार का ज्वलंत प्रमाण है। विश्व में हिंदी के प्रचार–प्रसार को और बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर अनेक प्रयास किए जाते रहे। देश–विदेश के विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों में हिंदी के शिक्षण से हिंदी को विशेष स्थान मिला। हिंदी साहित्य की चुनी हुई रचनाओं का विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी किया जाने लगा। धीरे–धीरे हिंदी विश्व के लगभग हर प्रमुख विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थान पाती चली गई और वहां रहने वाले भारतीय नागरिकों ने इसे पुष्पित–पल्लवित करने में सहयोग दिया। सोवियत संघ में संस्कृत और हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की लंबी परंपरा का परिचय गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्री रामचरितमानस' के रूसी अनुवाद से प्राप्त होता है, जो सन् 1940 में वारान्निकोव द्वारा किया गया था।

भारत और रूस के सांस्कृतिक सम्बन्ध के प्रारंभिक सूत्र गेरासिम स्टेपानेविच लेबदेव से जुड़ते हैं, जो एक रूसी यायावर, भाषाविद् और अनुवादक थे। बंगाल में यूरोपियन शैली के नाट्य थिएटर की स्थापना का श्रेय भी लेबदेव से को दिया जाता है, जिसे उन्होंने 1795 ईसवी में प्रारंभ किया था। रेबदेवसे ने 'शुद्ध और मिश्र पूर्व भारतीय भाषाओं का व्याकरण' लंदन से वर्ष 1801 ईसवी में प्रकाशित किया, जिसमें तत्कालीन कलकत्ते की बोली का परिचय मिलता है। भारतीय रहन–सहन और रीति–रिवाजों से सम्बन्धित रूसी भाषा में लिखी उनकी पुस्तक 'पूर्व भारत के ब्राह्मणों का निष्पक्ष विवरण' में हिंदू समाज की परंपराओं और प्रथाओं का विस्तृत और रोचक वर्णन है। यूरोप में भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रारंभिक जिज्ञासुओं में लेबदेव का नाम ऐतिहासिक महत्व का है। कोलकाता में उनकी स्मृति में लगा फलक इसे प्रमाणित करता है।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में सेंट पीटर्सबर्ग में 'प्राच्य विद्या' संस्थान की स्थापना के साथ भारतीय संस्कृति, योग, दर्शन और परंपराओं की प्रतिनिधि संस्कृत भाषा के अध्ययन की परंपरा का सूत्रपात हुआ। कालांतर में अलेक्सान्द्र पेत्रोविच वारान्निकोव जैसे मेधावी छात्रों की लगन के फलस्वरूप हिंदी सहित भारत की अन्य भाषाओं, जैसे मराठी, बांग्ला और पंजाबी को भी यहाँ स्थान मिला। 'लेनिनग्राद ओरिएंटल इंस्टीट्यूट' और 'लेनिनग्राद विश्वविद्यालय' में भाषाओं के अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम तैयार किए गए।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी वारान्निकोव को हिंदी–रूसी शब्दावली का पितामह माना जाता है। हिंदी के अतिरिक्त मराठी–रूसी शब्दकोश, 'हिंदुस्तानी की पेचीदा क्रिया पद्धति', 'हिंदी की समस्याएं' और 'भारतीय भाषाओं की परंपरा में ऐतिहासिक तुलनात्मक पद्धति के तत्व' वारान्निकोव की ख्याति का मुख्य आधार हैं। 'श्री रामचरितमानस' के अनुवाद के प्राक्कथन में वे कहते हैं, "भारत में महती ख्याति प्राप्त गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामायण' मात्र मनोरंजन के लिए नहीं लिखी बल्कि उन्होंने अपने इस कार्य के द्वारा देश की रक्षा के लिए अपूर्व मौलिक मार्गदर्शन